इस बार आसान नहीं एनआईटी के विधायक नागेंद्र भडाना की डगर

फ़रीदाबाद (म.मो.) एनआईटी विधानसभा 86 से इंडियन नेशनल लोकदल की टिकट पर चुनाव जीतने के बाद भाजपा की गोद में बैठने वाले विधायक नागेंद्र भडाना की डगर आने वाले चुनाव में आसान नहीं होगी। पार्टी विरोधी गतिविधियों और भाजपा से मधुर संबंध स्थापित करने के कारण इस बार उन्हें इनेलो की टिकट भी नहीं मिलेगी।

भडाना भाजपा की टिकट मिलने की उम्मीद में लगातार भाजपाई नेताओं के सम्पर्क में हैं। लेकिन इस विधानसभा क्षेत्र से यशवीर डागर की मजबूत दावेदारी के चलते यह भी संभव होता नहीं दिखाई दे रहा है। यदि भडाना आजाद उम्मीदवार के रूप में चुनाव लड़ने का प्रयास करेंगे तो भी उन्हें मुंह की खानी पड़ेगी। क्योंकि पिछले करीब तीन साल के कार्यकाल के दौरान इस विधानसभा क्षेत्र में रहने वाली जनता का कोई भला करवाने में कामयाब नहीं हो पाए हैं।

पिछले विधानसभा चुनाव नागेंद्र भडाना पूर्व मंत्री शिवचरण लाल शर्मा का गढ़ माने जाने वाले जवाहर कॉलोनी, संजय कॉलोनी, पर्वतीया कॉलोनी, सेक्टर 55 और अन्य मज़दूर बस्तियों में सेंध लगा कर जीतने में कामयाब हुए थे। नागेंद्र को इससे पहले वर्ष 2009 के विधानसभा चुनाव में इन इलाकों से नाममात्र को भी वोट नहीं मिली थी। डबुआ कॉलोनी तो पहले ही मजबूत थी, इसलिए 2009 का चुनाव हारने के बाद नागेंद्र ने इस इलाके में डेरा डाल दिया था। नागेंद्र ने इनेलो नेताओं व कार्यकर्ता के साथ साथ सिक्ख और पंजाबी समुदाय के उन लोगों के साथ मधुर संबंध बनाने शुरू कर दिया था, जिनकी इलाके में पकड़ थी। अपने इस मकसद में नागेंद्र कामयाब भी हुए थे। वर्ष 2014 का विधानसभा चुनाव नागेंद्र को जीतवाने में जगजीत पन्नू, उनके भाई कमल पन्नू, संतोष शर्मा, भजनलाल नैन और इलाके के अन्य कई लोगों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। जगजीत पन्नू वर्तमान में इनेलो की महिला जिलाध्यक्ष है।

लेकिन चुनाव जीतने के बाद नागेंद्र भडाना ने एकदम से अपना रंग बदल लिया। वह अपने निहित स्वार्थो की पूर्ति और जातिवाद के कारण तुरंत भाजपा की गोद में जा बैठे। आम लोगों में वह यह प्रचार कर रहे हैं कि वह क्षेत्र में विकास कार्य करवाने के लिए भाजपा के नेताओं से तालमेल बना कर चल रहे हैं। लेकिन विकास के नाम पर वे यहां कुछ नया करवाने में कामयाब नहीं हो पाए। इस इलाके के लोगों का कहना तो यहां तक भी है कि शिवचरण लाल शर्मा के कार्यकाल के दौरान बनी सड़कों में गड्ढे बन जाने के बाद वे उनकी मर मत तक नहीं करवा पाए हैं। विधानसभा क्षेत्र में पीने के पानी, सफाई व्यवस्था और अन्य समस्याओं को लेकर लोग काफी परेशान हैं।

नागेंद्र भडाना ने विधानसभा क्षेत्र के वाशिंदों का भरोसा तो तोड़ा ही साथ ही उन्होंने इनेलो की पीठ पर भी छुरा घोंप दिया। अनौपचारिक रूप से भाजपा का दामन थामने के बाद उन्होंने पार्टी की गतिविधियों में तो हिस्सा लेना बंद कर दिया साथ ही साथ इनेलो के कार्यकर्ताओं से भी पूरी तरह मुंह मोड़ लिया। नागेंद्र भडाना यह दावा करने लगे कि उन्होंने चुनाव इनेलो के नहीं बल्कि अपने दम पर जीता है। नगर निगम चुनाव वार्ड नंबर 5 से संतोष शर्मा और वार्ड 6 से जगजीत पन्नू ने लड़ा था। दोनों इनेलो के मजबूत उमीदवार थे। लेकिन नागेंद्र ने चुपचाप इनकी बजाए अन्य उ मीदवारों की मदद की थी। नागेंद्र भडाना की इन तमाम कारगुजारियों के कारण इस इलाके के इनेलो कार्यकर्ता के साथ साथ अन्य कई मौजिज लोगों ने अपना मुंह मोड़ लिया।

जानकार सूत्रों का दावा है कि इनेलो इस बार नागेंद्र भडाना को किसी भी कीमत पर पार्टी की टिकट देने के मूड में नहीं है। इस विधानसभा क्षेत्र से इनेलो की टिकट पर मजबूत दावेदारी जगजीत पन्नू की बताई जा रही है। जिसके कारण जगजीत पन्नू अभी से विधानसभा चुनाव लड़ने की पूरी तैयारी में जुटी हुई है। इनेलो के वे नेता व कार्यकर्ता पन्नू के साथ जुड़े गये हैं जो पिछले चुनाव में नागेंद्र के साथ थे। जगजीत पन्नू का कहना है कि पिछला विधानसभा चुनाव नागेंद्र भडाना ने इनेलो की टिकट और इलाके के लोगों का समर्थन मिलने के कारण ही जीता है। भडाना पार्टी और इलाके के लोगों की उम्मीदों पर जरा भी खरा उतरने में कामयाब नहीं हो पाए है। इन तमाम बातों को देख कर स्पष्ट है कि नागेंद्र भडाना के लिए आने वाला विधानसभा चुनाव जीतना मुश्किल ही नहीं न मुमकिन नजर आ रहा है।

पिछला चुनाव हारने के बाद शिवचरण लाल शर्मा भी मैदान में ताल ठोकने की कम तैयारी नहीं कर रहे है। पिछले चुनाव में शिवचरण लाल शर्मा नागेंद्र भडाना से करीब 2900 वोटो से हारे थे। ऐसे में आगामी चुनाव के लिए शिवचरण लाल शर्मा की दावेदारी को भी कम करके नहीं आंका जा सकता। बहरहाल इस विधानसभा क्षेत्र से अगला चुनाव चाहे कोई भी जीते लेकिन नागेंद्र भडाना की हार साफ नजर आ रही है।

40 वर्ग फुट के कमरे में चल रहा है बीके का नशा मुक्ति केंद्र

फ़रीदाबाद (म.मो.) जिला सिविल सर्जन डॉ. गुलशन अरोड़ा की तानाशाही के कारण बीके अस्पताल में चल रहे नशा मुक्ति केंद्र (ओएसटी सेन्टर) के कर्मचारी अस्पताल परिसर के विभिन्न हिस्सों में धक्के खाने के बाद चार बाई दस के कमरे में पहुंच गए हैं। इस कमरे में आने वाले मरीजों के बैठने की व्यवस्था करना तो दूर बिजली का कनेक्शन तक लगवाने की जरूरत महसूस नहीं की गई है। इसके अलावा केंद्र में पिछले करीब डेढ़ साल से डॉक्टर तक तैनात नहीं है। केंद्र फिलहाल एक काउंसलर और एएनएम के भरोसे चल रहा है।

नशे के चंगुल में फंसे लोगों को इससे मुक्ति दिलवाने के नाम पर वर्ष 2013 में तत्कालिन राज्य सरकार ने बीके अस्पताल की ओपीडी के कमरा न बर 23 में ओएसटी सेन्टर (नशा मुक्ति केंद्र) की शुरूआत की थी। यहां एक डॉक्टर, डीपीएम (डाटा प्रोटेक्शन मैनेजर), काउंसलर और एएनएम की तैनाती की गई थी। सेंटर में भारी संख्या में लोग नशे से छुटकारा पाने के लिए आने शुरू हो गए थे। लेकिन सेन्टर मुश्किल से कुछ महीने ही चल पाया था कि सिविल सर्जन गुलशन अरोड़ा ने इसे शिफ्ट करवा अस्पताल के भवन से बाहर निकाल कर पुलिस चौकी के पास बने टूटे फुटे दो कमरों में स्थापित करवा दिया। लेकिन यहां आने के बाद भी इस सेन्टर के कर्मचारी ज्यादा दिन चैन की सांस नहीं ले पाए। एक मार्च 2016 में एम्बुलैंस के कंट्रोलरूम को यहां शिफट कर दिया गया। ओएसटी सेंटर को छोटा सा कमरा काम करने के लिए दिया गया। बाकी के बड़े हॉल में एम्बुलैंस कंट्रोलरूप चल रहा है।

लेकिन इसके बाद भी इस सेन्टर की मुसीबत कम नहीं हो रही थी। नवंबर 2016 में इस सेन्टर से यह कमरा भी छीन लिया गया।

सीएमओ ने फिर तुगलकी फरमान सुनाते हुए सेन्टर को आयुष केंद्र के पास बने करीब 40 वर्ग फुट के कमरे में भेज दिया। इस कमरे की छत सीमेंट की चादरों से बनी हुई है। इसके अलावा पिछला करीब एक साल बीत जाने के बाद भी यहां पर बिजली का कनेंक्शन लगवाने की जरूरत महसूस नहीं की गई। करीब दो साल पहले सेन्टर में अनुबंध के आधार पर काम कर रहा डाक्टर काम छोड़ कर चला गया था। जिसके बाद यहां आने वाले मरीजों को अस्पताल की ओपीडी में तैनात मनोचिकित्सक के पास भेजा जाता था। लेकिन मनोचिकित्सक डॉ. धर्मबीर नेहरा का करीब एक साल पहले तबादला हो जाने के बाद यह सेन्टर बिना डॉक्टर के ही चल रहा है।

डॉक्टर के अलावा इस सेन्टर डीपीएम भी तैनात नहीं है। अब सेन्टर की पूरी जिम्मेदारी एक काउंसलर और एएनएम पर है। सेंटर में हर रोज करीब 80 से 100 नियमित मरीज दवा लेने के लिए आते है। ऐसे में समझा जा सकता है कि कमरा छोटा होने के कारण उन्हें कितनी परेशानी झेलनी पड़ती होगी। जबकि गाइड लाइन के मुताबिक ओएसटी सेन्टर कम से कम चार कमरों का होना आवश्यक होता है। डॉक्टर न होने के कारण नए मरीजों को बिना इलाज के लौटना पड़ रहा है।

पूरे हरियाणा में नशे से छुटकारा पाने के लिए सिर्फ नौ ही ओएसटी सेन्टर खोले गए थे। फ़रीदाबाद जिले से लगते अन्य किसी भी जिले में ओएसटी सेन्टर नहीं है। फ़रीदाबाद के बाद सबसे नजदीक ओएसटी सेन्टर बहादुरगढ़ में मौजूद है। वहां तक पहुंचना हर मरीज अथवा उनके परिजनों के लिए संभव नहीं होता।

सीएमओ डॉ. गुलशन अरोड़ा नशा मुक्ति केंद्र के साथ जिस तरह का व्यवहार कर रहे है, उससे साफ नजर आता है कि वह किसी भी कीमत पर इसे बंद करवाना चाहते हैं। ताकि नशे से छुटकारा पाने के इच्छुक लोगों को निजी अस्पताल दोनों हाथों से लूट सकें।

नीमका जेल: मुख्यमंत्री की मौजूदगी में डीजी के भाषण पर बजी तालियों से बौखलाया जेलर, कैदियों को हड़काया

फ़रीदाबाद (म.मो.) दिनांक 26 अक्तूबर को नीमका जेल में मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर व डीजी डॉ. के पी सिंह की मौजूदगी में राज्य सरकार के आध्यात्मिक आका, स्वामी ज्ञानानंद का गीता प्रवचन हुआ। उसी सभा में डीजी जेल द्वारा जब यह घोषणा की गयी कि कैदियों को कोयला, बीड़ी व उन्य आवश्यक सामान जो कैंटीन से अति महंगे दरों पर मिलता है, आगे से उचित बाजार भाव से बायोमीट्रिक प्रणाली से मिलेगा। इतना सुनते ही तमाम कैदियों ने खुश होकर इतनी तालियां बजाई कि काली कमाई खाने वाला जेलर अनिल कुमार बुरी तरह से फुक गया। उसे ऐसा लगा जैसे भरी सभा में तमाम कैदियों ने उसके मुंह पर एक साथ कई तमाचे जड़ दिये हों।

वैसे केपी सिंह को यह भी बताना चाहिये था कि उनके डीजी जेल रहते यह धंधा नीमका जेल में चल कैसे रहा था? क्या हरियाणा की अन्य जेलों में काली कमाई का यह जरिया बन्द होगा या नहीं?

सुधी पाठकों ने गतांकों में पढ ही लिया होगा कि कैदियों को नोच-नोच कर खाने वाला जेलर अनिल किस तरह से मोटी लूट करने में जुटा है। कैदियों को मिलने वाले राशन का आधे से अधिक तो यह खुद अकेला ही डकार जाता है बाकी उसके लगुए-भगुए भी कसर नहीं छोड़ते। बीड़ी का 10 रुपये वाला बंडल यह डाकू 200 रुपये में बेचता था, इसी तरह कच्चा कोयला व अन्य हर प्रकार की आवश्यक चीजें भी यह ब्लैक में बेचता है। डीजी जेल ने अब मजबूरीवश इस खबर का संज्ञान लेते हुए आदेश जारी किया था कि बीड़ी का बंडल, चाहे किसी भी प्रकार का हो 12 रुपये से अधिक में नहीं बेचा जायेगा। इसी तरह नीमका जेल में अन्य आवश्यक वस्तुएं भी सामान्य दरों पर बेची जायेंगी।

जेल नियमावली के अनुसार जेल में नकदी का प्रयोग वर्जित है। सारी खरीदो-फ़रोख्त कैशलैश (बायोमीट्रिक) प्रणाली से होनी चाहिये। इस प्रणाली द्वारा हर चीज़ निश्चित भाव पर बेची जाती है जिसका पूरा रिकार्ड कम्प्यूटर में दर्ज होता है। कम्प्यूटर में दर्ज होने से बचाने के लिये अनिल अपनी समानान्तर कैंटीन चलाता है जिसमें वह हर माल मनमाने भावों पर बिकवाता है। जब भी किसी वीआईपी का जेल दौरा होता है तो इस समानान्तर कैंटीन को बन्द कर केवल बायोमीट्रिक कैंटीन को ही चलाया जाता है, जिस पर जानबूझ कर बहुत कम तरह के सामान रखे जाते हैं।

केपी सिंह, डीजी अनिल जेलर

दोनो है एक दूसरे के राजदार

जब डीजी ने जेल में पूरी तरह से कैशलैश कैंटीन बायोमीट्रिक प्रणाली से चलाने व उचित दामों पर सामान बिकवाने की घोषणा की तो कैदियों का हर्षित होकर तालियां बजाना स्वाभाविक था। समझा जाता है कि डीजी साहब को **'मज़दूर मोर्चा'** में छपी इस बात का भी पता लग गया था कि बीड़ी का बंडल, बहुत कम मात्रा में, केवल दिखावे के लिये, बायोमीट्रिक प्रणाली से 12 रुपये का बेचा जा रहा है जबकि असली बिक्री नकद में 30 रुपये प्रति बंडल के हिसाब से हो रही है।

वैसे तो जेलर के फुकने के लिये कैदियों का हर्षित होना ही काफ़ी था। लेकिन कैदियों द्वारा कुछ दरखास्तें सीधे डीजी साहब को दिये जाने ने तो आग में घी का काम कर दिया। परिणामस्वरूप जेलर ने डीजी के जाते ही पूरे जेल को बन्द कर दिया। यानी कैदियों को बैरिकों से बाहर निकल कर घूमने-फिरने व रोज-मर्रा की गतिविधियों पर सख्त पाबंदी लगा दी। कैंटीन सामान की सप्लाई पूरी तरह बंद कर दी। मुख्यमंत्री खट्टर द्वारा उद्घाटित गीता हॉल व जिम आदि सब बन्द कर दिये।

सप्ताह भर की इस सख्ती के बाद 2 नवम्बर को जेलर ने कैदियों की परेड बुला कर, उसने अपने गुस्से का इजहार खुल कर किया। उसने सार्वजनिक रूप से कहा, ''तुमने डीजी के सामने तालियां बजाकर मेरी जो बेइज्जती की है उसका भुगतान तुम्हें ही करना पड़ेगा। तुम्हें सीधे डीजी को दरखास्तें देने की क्या जरूरत थी, क्या मेरे माध्यम से दी गयी दरखास्तें ऊपर नहीं पहुंचती? तुम मेरी बेइज्जती इस तरह से कराओगे तो, तुम मेरे कोई रिश्तेदार नहीं लगते। जेल मैंने चलानी है डीजी ने नहीं वह तो 300 किलोमीटर दूर बैठा है।'' उसने यह भी कहा, ''मैं चाहता तो उसी दिन अलार्म बजवा कर बाहर से पुलिस बुलवा कर तुम्हारे हाड तुड़वा सकता था, 2-4 मर भी जाते तो कोई पूछने वाला नहीं।''

अपने इसी भाषण में जेलर ने हिसार, जिंद, अम्बाला आदि जेलों में तबादले पर आये कैदियों पर सीधा नशाना साधते हुए कहा कि यह नीमका जेल है और मुझे तुम जैसों को सुधारना खूब आता है। मार-मार कर ... बादर जैसे लाल बना दूंगा, (दर्द के मारे)...टेक कर बैठन बी नहीं पाओगे। बिना नाम लिये एक कैदी की ओर इशारा करते हुए कहा कि कैदियों को भड़काना बहुत महंगा पड़नेवाला है तेरे को।

नाम न छापने की शर्त पर परेड में मौजूद एक जेलकर्मी ने इस संवाददाता से मिल कर बताया कि संजीव नाम का वह कैदी गत 15-16 साल से विभिन्न जेलों में सज़ा काटता आ रहा है। बहुत ही पढा-लिखा व कायदे-कानून का जानकार होने के साथ-साथ स्वामी ज्ञानानंद का भी बहुत पुराना शिष्य है। वह जेल में नियमित रुप से हर रोज़ कैदियों को गीता पाठ कराता है। जेलर का मानना है कि कैदियों ने उसी के इशारे पर तालियां बजाई थीं। यह जेलर इतना गंदा व अपराधी प्रवृति का है कि किसी के भी विरुद्ध कुछ भी षडयंत्र रच सकता है।

मोबाईल पकड़ा 83 हजार लेकर छोड़ा

14 नवम्बर सांय 6 बजे अक्षय तनेजा व अजय ग्रोवर नामक दो कैदियों से क्रिक रिस्पोन्स टीम (QRT) ने एक मोबाईल फोन पकड़ा, लेकिन जेलर अनिल ने 83000 रूपए लेकर उसे छोड़ दिया। यदि रिश्वत की यह मोटी रकम न मिलती तो दोनों की पिटाई होती व थाना सदर में एफआईआर दर्ज होती।

दूसरी ओर, यदि पकड़ने वाली टीम खुद ही इस केस को निपटा देती तो दस हजार में निपट जाता, परन्तु उन्होंने ईमानदारी दिखाते हुए केस जेलर को सौंपा था जिसने मोटा माल मार लिया।

अपनी पीठ थपथपाने वाले प्रेस नोट ही जारी करता है जेलर

दिनांक 3 नवम्बर को डीजी जेल द्वारा जेल परिसर में किये गये कुछ छुट-पुट उद्घाटनों को लेकर जेलर ने, डीजी के साथ अपनी फ़ोटो सहित, प्रेस नोट जारी करके अपनी पीठ खुद थपथपाने का प्रयास किया। उसने 26 अक्तूबर की (तालियां बजाने वाली) घटना का कोई जिक्र करने की जरूरत नहीं समझी। उसे यह बड़ी भारी गलतफ़हमी है कि जेल की चारदिवारी के बाहर केवल वही बात जा सकती है जिसे वह भेजना चाहेगा।

अपने इसी विश्वास के चलते उसने 26 अक्तूबर की शाम को तो पूरा राशन जारी करके बहुत बढिया खाना बनवाया, परन्तु अगले ही दिन खुंदक में आकर सरकारी राशन तो डकारा ही, साथ में ज्ञानानंद, बंदियों के लिये जो कुछ प्रसाद के रूप में खाद्य सामग्री लाये थे, उसे भी डकार गया। ज्ञानानंद जब भी जेल में अपने प्रवचन हेतु आते हैं तो तमाम बंदियों के लिये भरपूर मात्रा में कुछ न कुछ खाने को लाते हैं। परन्तु उन्हें क्या पता कि उनके लाये प्रसाद को हड़पने वाला एक 'महा भुक्खड़' भी यहां बैठा है।

जेलर अनिल द्वारा की जा रही घोर अनियमितताओं बल्कि आपराधिक साजिशों को देखते हुए कहा जा सकता है कि यदि समय रहते कोई उचित कार्यवाही नहीं की गयी तो इस जेल में कभी भी कोई बड़ा कांड होना तय है।

प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक सतीश कुमार ने अपने स्वामित्व में एजीएस पब्लिकेशन्स, डी-67, सैक्टर-6, नोएडा से मुद्रित करवा कर 1 डी/2बी.पी. नियर हार्डवेयर चौक, एनआईटी फरीदाबाद से प्रकाशित किया। Postal Reg. No. L/H.R/FBD/463-06